भोला पासवान शास्त्री

जन्म	:	1914 ।
निधन	:	10 सितंबर 1984 ।
जन्म-स्थान	:	बैरगाछी, जिला-पूर्णिया, बिहार ।
पिता	:	धूसर पासवान ।
शिक्षा	:	बिहार विद्यापीठ, पटना एवं काशी विद्यापीठ, वाराणसी से 1940 में स्नातक ।
कार्यवृत्त	:	छात्र जीवन से स्वाधीनता आंदोलन और राजनीति में सक्रिय । 1942 के राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भागीदारी, 21 माह का कठोर कारावास । 1946 में बिहार प्रदेश काँग्रेस कमिटी के सदस्य । 1952 के आम चुनाव में धमदाहा-कोढ़ा निर्वाचन क्षेत्र से बिहार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित और डॉ० श्रीकृष्ण सिंह के मंत्रिमंडल में शामिल । 1957, 1962, 1967 के चुनावों में विधायक बने । मार्च 1968 से जनवरी 1972 तक की अवधि में तीन बार बिहार के मुख्यमंत्री बने । 1972 में राज्यसभा के सदस्य चुने गए और फरवरी 73 में केंद्रीय मंत्री बने । अप्रैल 1976 में पुनः राज्यसभा के सदस्य चुने गए और 1982 तक संसद सदस्य के रूप में अपनी सेवाएँ दीं ।
संपादन	:	पूर्णिया से प्रकाशित हिंदी साप्ताहिक पत्रिका 'राष्ट्र संदेश' का संपादन । पटना के हिंदी दैनिक 'दैनिक राष्ट्रवाणी' एवं कोलकाता के दैनिक पत्र 'लोकमान्य' के संपादक मंडल में सदस्य ।
कृति	:	'वियतनाम की यात्रा' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली से 1983 में प्रकाशित, अन्य लेख, टिप्पणियाँ आदि अब तक अप्रकाशित ।

भोला पासवान शास्त्री बिहार के एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी, प्रबुद्ध पत्रकार एवं राजनेता थे । राजनीतिक हलकों में उन्हें आज भी बड़े आदर एवं सम्मान से स्मरण किया जाता है । बिहार के प्रबुद्ध नागरिकों, राजनीतिकर्मियों एवं बुजुर्ग पत्रकारों के बीच अपनी सादगी, लोकनिष्ठा, देशभक्ति, पारदर्शी ईमानदारी एवं विचारशीलता के लिए वे दुर्लभ उदाहरण के रूप में याद किए जाते हैं । भोला पासवान शास्त्री सिद्धांतों और मूल्यों की राजनीति करनेवाले तपे-तपाए राजनेता थे । कोई भी प्रलोभन उन्हें अपने मूल्यों और आदर्शों से डिगा नहीं सकता था । अपने राजनीतिक और सार्वजनिक जीवन में बिहार के एक पिछड़े हुए सुदूर अंचल के वंचित वर्ग से उठकर राज्य एवं देश के ऊँचे राजनीतिक पदों तक पहुँचनेवाले शास्त्री जी अपनी बौद्धिक-नैतिक योग्यता और व्यक्तिगत गुणों के बल पर आगे बढ़ते गए थे । वे व्यक्ति, जाति या समुदाय

विशेष की राजनीति नहीं करते थे । वे संपूर्ण समाज एवं उसकी मुख्यधारा की राजनीति करते थे । आर्थिक-सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से समाज में जो भी पिछड़े दिखाई देते थे, उनके प्रति सजग दायित्वबोध बराबर उनमें बना रहा । उनके हितों के लिए वे निरंतर सचेष्ट रहे और बड़ा-से-बड़ा त्याग करने के लिए तत्पर रहे ।

भोला पासवान शास्त्री को अंतरराष्ट्रीय राजनीति की गहरी समझ थी । भारतीय परंपरा के प्रति उनके भीतर गहरा अनुराग भाव था । लोकतंत्र में उनकी गहरी निष्ठा थी । वे मानवतावादी आदर्शों पर टिकी हुई सामाजिक बराबरी और सद्‌भाव के स्वप्न को साकार होते देखना चाहते थे । उनकी वियतनाम यात्रा संबंधी पुस्तक 'वियतनाम की यात्रा' से जिससे एक अंश यहाँ प्रस्तुत है, ये बातें प्रमाणित होती हैं ।

अपनी राष्ट्रीय अस्मिता और स्वतंत्रता के लिए लंबा अथक संघर्ष करनेवाले देश वियतनाम के प्रति तथा उसके महान नेता हो-ची-मीन्ह के प्रति उनके मन में गहरा सम्मान भाव था । ऐसे विनम्र, संवेदनशील और जिज्ञासु नेता का यह यात्रा-वृत्त अनेक अर्थों में प्रेरणास्पद है ।

♦ ♦ ♦

"यात्रा जितनी बाहरी होती है उतनी ही भीतरी भी । यात्रा का विवरण जितना स्थूल भू-विस्तार से संबद्ध होता है उतना ही सूक्ष्म मानसिक भूगोल से भी । 'टूरिस्ट गाइड' के सहारे अनेक व्यक्ति एक ही यात्रा कर सकते हैं; यात्रा-संस्मरण के सहारे की गई प्रत्येक पाठकीय यात्रा भी उतनी ही विशिष्ट होती है जितनी लेखक की यात्रा रही । और प्रत्येक के लिए संस्मरण-लेखक के मानस में प्रवेश करना आवश्यक होता है । यही इस तरह के यात्रा-संस्मरणों की रोचकता का आधार हो सकता है ।

नक्शे में मैं अब भी देखता हूँ । वास्तव में जितनी यात्राएँ स्थूल पैरों से करता हूँ, उस से ज्यादा कल्पना के चरणों से करता हूँ । लोग कहते हैं कि मैंने अपने जीवन का कुछ नहीं बनाया, मगर मैं बहुत प्रसन्न हूँ, और किसी से ईर्ष्या नहीं करता । आप भी अगर इतने खुश हों तो ठीक – शायद आप पहले से मेरा नुस्खा जानते हैं – नहीं तो मेरी आप को सलाह है, "जनाब, अपना बोरिया-बिस्तर समेटिए और जरा चलते-फिरते नजर आइए ।" यह आप का अपमान नहीं है, एक जीवन दर्शन का निचोड़ है । 'रमता राम' इसीलिए कहते हैं कि जो रमता नहीं, वह राम नहीं । टिकना तो मौत है ।"

(अरे यायावर रहेगा याद ?)

–अज्ञेय

मेरी वियतनाम यात्रा

स्मृति पर जोर डालने पर लगता है कि बात कोई चालीस वर्ष पहले की है । हो सकता है दो-चार वर्ष और पहले की हो । एक दिन बड़े अलस और अन्यमनस्क भाव से हिंदी की किसी मासिक पत्रिका के पन्ने उलट-पलट रहा था । हठात् एक पन्ने पर पेंसिल स्केच की एक तस्वीर दिखी । बड़ा दुबला-पतला, सादगी का नमूना एक आदमी । लेकिन व्यक्तित्व बड़ा ही प्रेरणाप्रद, चमत्कारी, तेजस्वी और मैजेस्टिक । फेफड़ों में प्राणवायु फूँकने वाला । महामानव । कोई मसीहा । राजनीतिक फकीर जैसा । सव्यसाची । उनकी लहसुननुमा दाढ़ी बड़ी फबती थी । उनकी बाहर की आकृति से भीतर की प्रतिकृति परिलक्षित हो रही थी । देखकर लगा जैसे मैंने कोई निधि पा ली हो । सद्यःस्नात-सा चित्त प्रसन्न हो उठा । वे कौन हैं, कहाँ के हैं और क्या हैं, जानने की सुधि भी नहीं रही । देखता ही रह गया उस तस्वीर को । उतने ही कलात्मक ढंग से उस तस्वीर के नीचे छोटे और पतले हरफों में लिखा था–'हो-ची-मीन्ह' । इतने वर्ष पहले देखी हुई उस तस्वीर की जीवंतता तथा प्रभावकारिता बराबर मेरे मानस-पटल पर अंकित रही है । वह तस्वीर अंतःसलिला फल्गू नदी की तरह मेरे हृदय को सींचती रही ।

हो-ची-मीन्ह

कुछ दिनों बाद उस महान विभूति की कहानी पढ़ने को मिली । आज से लगभग नब्बे वर्ष पहले जब वियतनाम विदेशी साम्राज्यवाद के शिकंजे में जकड़ा हुआ था और उसकी अपनी राष्ट्रीयता अंधकार से ढँकी हुई थी, उन्हीं दिनों वहाँ की भूमि पर उस महान पुरुष का जन्म हुआ था । उन्होंने वियतनाम की जनता को गुलामी से मुक्ति दिला कर सतत उन्नति की दिशा में अग्रसर करने के लिए मार्गदर्शन किया ।

अंतरराष्ट्रीयता पनप नहीं सकती, जब तक राष्ट्रीयता का पूर्ण विकास न हो । इसके लिए उन्होंने क्रांति, बलिदान और त्याग का पैगाम दिया । इसीलिए वे विश्वद्रष्टा कहलाए और विश्व-विश्रुत हुए । इसमें संदेह नहीं कि उनका जीवन कभी नहीं सूखने वाले प्रेरणा-स्रोत के समान बना रहेगा और मानव मात्र को त्याग, बलिदान और आजादी के लिए संघर्ष की प्रेरणा देता रहेगा ।

दिन बीतते गए । जब बिहार से दिल्ली आया तो सबसे पहले मुझे मॉरीशस जाने का मौका मिला । बड़ा आनंद आया । यह मेरी पहली विदेश यात्रा थी । अब जब कभी कहीं बाहर जाने

का मौका मिलता है, वहाँ चला जाता हूँ । भरसक प्रयत्न करता हूँ कि उस अवसर को हाथ से न जाने दूँ । वियतनाम की यात्रा के बारे में भी यही बात है । मेरी जीवन यात्रा के लगभग दस दिन वियतनाम में बीते हैं ।

समय पर घोषणा हुई । मित्रों ने 'यात्रा शुभ हो' कहकर विदा किया । हम एयर इंडिया के बोइंग विमान 707 में आ गए । फिर अंतिम घोषणा हुई । विमान धीरे-धीरे रनवे पर बढ़ने लगा । रफ्तार तेज होती हुई जान पड़ी और देखते-देखते उसने धरती से अपना नाता तोड़कर आसमान से अपना संबंध जोड़ लिया । फिर अपनी गति को तेज करता हुआ आकाशमार्ग से बैंकाक की ओर चल पड़ा । बैंकाक तक बिना रुंके उड़ान करनी थी ।

जिंदगी का हर कदम मंजिल है । इस मंजिल तक पहुँचने से पहले साँस रुक सकती है । चिंतन की इसी पृष्ठभूमि से मेरी वियतनाम की यात्रा शुरू हुई । धरती के शोर-गुल, भाग-दौड़ और अस्तव्यस्तता से हजारों फीट ऊपर आसमान के स्वच्छ शांत वातावरण में जीवन की न मालूम कितनी मधुर स्मृतियाँ मेरे मानस पटल पर तितली की तरह उड़ती हुई आ जा रही थीं । इस तरह मैं अपनी भूली-बिसरी यादों में गोते लगा रहा था कि अचानक कान में कुछ दर्द महसूस हुआ । विमान यात्रा में प्राय: मैं कान के दर्द का शिकार हो जाता हूँ । कारण समझने में विशेष देर नहीं लगी । विमान धीरे-धीरे हजारों फीट ऊँचाई से नीचे आ रहा था । दूर तक फैली बिजली की रोशनी दिखाई पड़ी । कोई बड़ा शहर मालूम पड़ता था । घड़ी देखी । बिमान के बैंकाक पहुँचने का समय हो रहा था । जहाँ तक दृष्टि पहुँच सकती थी, मैंने विमान से बैंकाक को देखने की कोशिश की । हॉस्टेस ने सीट-बेल्ट बाँध लेने और कुर्सी पर सीधा बैठने की घोषणा की । विमान आराम से अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतर गया । बैंकाक तक की यात्रा सुखद रही ।

जब हमलोग यहाँ पहुँचे, तब तीन बजे रात का समय था । हम लोगों की घड़ी में डेढ़ बज रहे थे। वहाँ-यहाँ के समय में डेढ़ घंटे का फर्क था । हम लोगों को वियतनाम में दस दिन ठहरना था । थाइलैंड और वियतनाम का समय मिलता है इसीलिए हम लोगों ने अपनी घड़ी को बैंकाक टाइम से मिला लिया । अपना-अपना पासपोर्ट, वीजा, टिकट और बैंकाक में ठहरने के लिए वह फॉर्म, जो दिल्ली में विमान पर बैठने के समय भर कर अपने पास रखा था, जाँच आदि के लिए भारतीय दूतावास के पदाधिकारियों के जिम्मे कर दियाhttps://www.evidyarthi.in/

एयरपोर्ट से शहर लगभग उन्नीस किलोमीटर है । पहुँचने में लगभग पौन घंटा लग गया । गनीमत समझिए कि अधिकांश यात्री पहले ही एयरपोर्ट से शहर के लिए प्रस्थान कर चुके थे । नहीं तो घंटों लग सकते थे । सड़क काफी चौड़ी और बड़ी अच्छी है । मालूम हुआ वह सुपर नेशनल हाइवे है । हम लोगों के ठहरने के लिए होटल ओरिएंट में प्रबंध किया गया था । वह होटल बैंकाक के सबसे अच्छे आधुनिक होटलों में से एक है । कमरा ठीक-ठाक करने में करीब पौन घंटा लग गया । वहाँ भी अपना नाम, राष्ट्रीयता और पासपोर्ट का नंबर लिखकर होटल के अधिकारियों को देना पड़ा ।

मुझे 251 नंबर का कमरा मिला । वह तीसरी मंजिल पर था । लिफ्ट द्वारा सामान कमरे में पहुँचा दिया गया । बड़ी थकावट थी । कमरा वातानुकूलित था । काफी ठंढा । आते ही बिछावन पर पड़ रहा । बड़ी गहरी नींद सोया । सवेरे नौ बजे आँख खुली । बिछावन पर आज का 'बैंकाक पोस्ट' रखा था । उसे एक बार सरसरी नजर से देखा । इस बीच सुरजीत ने जल्दी से तैयार होकर होटल के स्वागत कक्ष में पहुँचने के लिए फोन किया। दस-ग्यारह बजे एयरपोर्ट पर पहुँचना आवश्यक था ।

हम लोग बैंकाक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे आ गए । सामान उतारा गया । तब तक हमें लाउंज में बैठाया गया । विमान प्रतीक्षा कर रहा था । आज हम लोग हानोई के लिए प्रस्थान कर सकेंगे । मुझे खुशी हो रही थी । सब ठीक-ठाक हो गया । दोनों दूतावास के लोग विदाई-स्वागत के लिए तैयार बैठे थे । घोषणा हुई । हम लोग एक विशेष रास्ते से हांग-खोंग वियतनाम विमान के पास लाए गए । वियतनामी भाषा में 'हांग' का अर्थ मार्ग और 'खोंग' का अर्थ हवा होता है । अंग्रेजी में इसको 'एयर वियतनाम' कहेंगे ।

हम लोग एक-एक करके विमान के भीतर आ गए । विमान हम लोगों को लेकर बैंकाक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से वियतनाम की राजधानी हानोई के लिए उड़ा । थोड़ी देर बैंकाक शहर के ऊपर मंडराते हुए विमान अपनी मंजिल की ओर चल पड़ा । मैंने एक बार विमान से बैंकाक को फिर से देखा । इसके बाद वह नजर से ओझल हो गया । आसमान में कुहासा छाया हुआ था । इसलिए धरती की चीजें बहुत कम दिखाई पड़ रही थीं । जहाँ कुहासा घना नहीं होता था, वहाँ कभी कोई गाँव, नदी, खेत, खलिहान और जंगल दिखाई देते । लगभग डेढ़ घंटे की उड़ान के बाद अचानक एक बड़ी नदी दिखाई पड़ी । काफी बड़ी नदी मालूम पड़ी । श्री पार्थसारथी ने बताया कि यह 'मैकांग' नदी है । नाम सुनकर लगा जैसे वर्षों से मैं इस नदी को जानता हूँ । जब वियतनाम अमेरिका से लड़ रहा था उस समय न मालूम कितनी बार इस नदी का नाम दुनियाभर के समाचारपत्रों में आया करता था । लगा जैसे इस महानदी के साथ मेरा बड़ा गहरा भावनात्मक संबंध है । जब तक 'मैकांग' मेरी नजर से ओझल नहीं हो गई, मैं उसे देखता रहा । एक अज्ञात आध्यात्मिक तृप्ति का अपूर्व अनुभव हुआ मुझे । यह भी कम आश्चर्य की बात नहीं है कि वहाँ मैकांग नदी महागंगा के नाम से मशहूर है । तिब्बत से निकलती है और लाओस, कंबोडिया में बहती चली जाती है । इस तरह देखते-देखते विमान वेंचियन हवाई अड्डे पहुँचा और केवल बीस मिनट तक रुका । वेंचियन लाओस का अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा है । लगभग सभी यात्री यहाँ उतरे । कैंटीन में बड़ी मुश्किल से चावल की बनी पाव रोटी और चाय मिली । इस क्षेत्र में प्राय: चावल की बनी पाव रोटी मिलती है ।

विमान उड़ने का समय हो गया । घोषणा हुई । सभी यांत्री विमान के अंदर आ गए और अपनी-अपनी जगह पर जा बैठे । वेंचियन से हानोई पहुँचने में कुल डेढ़ घंटे लगे । जिस हवाई अड्डे पर विमान उतरा, उसका नाम 'जिया लाम' है । विमान द्वारा हानोई आने के लिए यही

अंतर्देशीय हवाई अड्डा सबसे नजदीक है । ज्योंही हांग-खोंग 'जिया लाम' हवाई अड्डे पर उतरा, वियतनामी अफसर कहिए या वियतनामी पीपुल्स पार्टी के कार्यकर्ता कहिए, बड़ी तेजी से विमान के अंदर आकर हम लोगों में से प्रत्येक से मिले । दूसरों ने गाइड और दुभाषिया का काम शुरू कर दिया । हम लोगों ने विमान से उतरने के बाद ज्योंही वियतनाम की भूमि का पहली बार स्पर्श किया, 'वियतनामी कमेटी ऑफ सोलिडिरेटी एंड फ्रेंडशिप विद् दी पीपुल्स ऑफ ऑल कंट्रीज' के पदाधिकारियों और उनके सहयोगियों ने गुलदस्ता भेंट करके स्वागत किया । हम लोगों के आगमन से वे बड़े प्रसन्न दिखे ।

विमान से थोड़ी ही दूर पर हम लोगों के लिए मोटरगाड़ी खड़ी थी । भारतीय प्रतिनिधि मंडल के प्रत्येक सदस्य के व्यवहार के लिए एक-एक मोटरगाड़ी की व्यवस्था थी । प्रत्येक के साथ 'वियतनाम कमेटी ऑफ सोलिडिरेटी एंड फ्रेंडशिप विद् दी पीपुल्स ऑफ ऑल कंट्रीज' का एक वरीय सदस्य और दुभाषिए का प्रबंध था । मोटरगाड़ी बड़ी थी । पूछने पर बताया गया कि ये गाड़ियाँ सोवियत रूस की बनी हुई थीं । अब हम लोग हानोई शहर की ओर चल पड़े । सड़कें साधारणतया अच्छी हैं । शहर में प्रवेश करने से पहले रेड रीवर पार किया । यह बड़ी नदी है । वियतनाम की एक मशहूर नदी । नदी पर लंबा पुल है । बीच से रेलगाड़ी आती-जाती है और दोनों बाजू सड़क है जिस पर मोटर, बस, ट्रक आदि और पैदल यात्री आते-जाते हैं । इसी रेड रीवर के किनारे वियतनाम की राजधानी हानोई बसा है । मुझे बताया गया कि 1982 ई० तक हानोई नगर की आयु नौ सौ वर्ष हो जाएगी ।

शहर में प्रवेश करते समय हानोई लोकोमोटिव रोड और हानोई रेलवे जंक्शन देखा । उसी समय एक रेलगाड़ी हाईफोंग से यात्रियों को लेकर हानोई जंक्शन पहुँच रही थी । डिब्बों में यात्री भरे थे । रास्ते में सड़कों के किनारे मकानों, बाजारों और हानोई नगर निवासियों को आते-जाते देखा ।

अब हम लोग अतिथिशाला के पास आ गए थे । यह अतिथिशाला औपनिवेशिक काल में बनी थी । अतिथिशाला से थोड़ी दूर पहले हम लोग मोटर से उतर गए और सड़क के दोनों किनारे रंग-बिरंगे वेश में बालक-बालिकाएँ, जवान और वृद्ध जो स्वागत के लिए खड़े थे, उनसे मिले । सबके हाथों में गुलदस्ता था और अपनी मातृभाषा में गाना गाकर वे हमलोगों का स्वागत करते हुए 'भारत और वियतनाम की मित्रता दृढ़ हो' के नारे भी लगा रहे थे । बड़े स्नेह और अपनत्व के साथ हम लोग एक-दूसरे से मिले । फिर थोड़ी देर बाद वहाँ से जुलूस के रूप में हम नई बनी राजकीय अतिथिशाला में पहुँचे । यहीं हम लोगों के रहने का प्रबंध था । यहाँ पहुँचने पर हमलोग एक बड़े होटल में बैठाए गए । यात्रा की थकावट दूर करने के लिए हमें सुगंधित गरम रूमाल हाथ-मुँह पोछने के लिए दिए गए । साथ-साथ चाय भी दी गई । मगर बिना दूध की । वह चाय मुझे एकदम अच्छी नहीं लगती । फिर भी एक-दो घूँट पी ही लेता था । वहाँ इसी तरह की चाय पीने की प्रथा है । मुझे तो वह चाय कुटकी चिरायता जैसी लगती ।

भोजनोपरांत थोड़ी देर आराम करने के बाद, ठीक पाँच बजे शाम को हम शहर की ओर निकले । वियतनाम पीपुल्स पार्टी के एक वरीय सदस्य और दुभाषिया बराबर हमारे साथ रहते थे। दुभाषिया मात्र संवाहक का काम करते थे । अपनी निजी राय कभी नहीं बतलाते थे । हमलोग शहर का सामान्य दृश्य देखते हुए वेस्ट लेक पहुँचे । हानोई शहर के अंदर चार-पाँच झीलें हैं । संभवत: इसीलिए हानोई को झीलों का नगर कहते हैं । वेस्ट झील के किनारे एक बड़ा होटल है । क्यूबा सरकार ने उसे बनाकर वियतनाम सरकार को दिया है। यह होटल हानोई में जुबली होटल के नाम से मशहूर है । यहाँ एक और खास बात है, वह है साइकिल .की सवारी । जिधर देखिए उधर झुंड-के-झुंड लोग साइकिलों पर सवार घूमते-फिरते और आते-जाते दिखाई पड़ते हैं । इस तरह झीलों और साइकिलों का शहर है हानोई । यहाँ ट्रक, बस और मोटरगाड़ियों का राष्ट्रीयकरण हो गया है । कोई इन चीजों को व्यक्तिगत संपत्ति की हैसियत से नहीं रख सकता ।

दूसरे दिन सवेरे खूब तड़के जगा और साढ़े छह बजे तैयार हो गया । आज का प्रोग्राम भी बड़ा प्रेरक और महत्त्वपूर्ण था । हो-ची-मीन्ह मसोलियम जाकर उस महान नेता की पार्थिव देह के दर्शन कर श्रद्धा के फूल चढ़ाना था । हम लोग ठीक समय मसोलियम पहुँच गए । नंगे पाँव एक ओर से भीतर ले जाए गए और राष्ट्रपति हो-ची-मीन्ह को माल्यार्पण करते दूसरी ओर से बाहर आ गए । जिस समय मैं हो-ची-मीन्ह के पार्थिव शरीर के समक्ष खड़ा होकर माल्यार्पण कर रहा था, उस समय की अपनी मन:स्थिति को शब्दों में व्यक्त करना असंभव है।

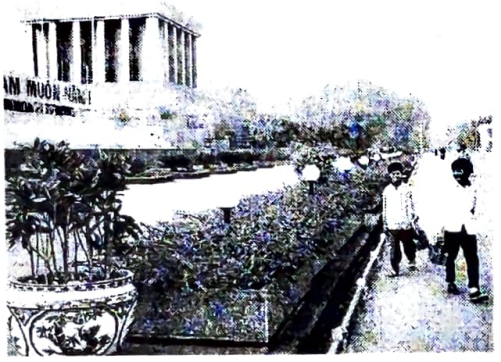

हो-ची-मीन्ह मसोलियम

काश ! मुझे उनसे कभी साक्षात्कार का अवसर मिला होता । वह स्थान बड़ा शांत और पवित्र है । हो-ची-मीन्ह को मैंने पहले कभी नहीं देखा था । सबसे पहले उनकी पेंसिल-स्केच की तस्वीर देखी थी। उसके बाद पत्र-पत्रिकाओं में बराबर उनकी तस्वीर देखने को मिलती रही। आज सर्वप्रथम उनके पार्थिव शरीर को देखने का अवसर मिला । वहाँ तेज रोशनी थी.। वे चित पड़े थे । माथा जरा-सा बाईं ओर झुका था, एक हाथ जाँघ पर रखा था । पैंट-शर्ट पहने हुए थे। दुबला-पतला लहसुननुमा दाढ़ी और मूँछें। लगा जैसे वे तंद्रावस्था में हों । द्रष्टा की तरह विचार-मग्न हों । वहाँ हमें बताया गया कि उस मसोलियम के लिए रूस ने एक पावरफुल एयरकंडीशनर वियतनाम को दिया है ।

वहाँ से हमलोग उस मकान को देखने गए, जिसमें फ्राँसीसी गवर्नर जनरल रहते थे । वह मकान नहीं, शाही महल है । अब भी वह एक युग का प्रतिनिधित्व करता दीखता है । जब हो-ची-मीन्ह पहली बार उत्तर वियतनाम के राष्ट्रपति हुए तो उनसे उसी महल में रहने के लिए अनुरोध किया गया । परंतु उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया तथा एक साधारण से मकान में रहना

पसंद किया ।

जहाँ वे पहले रहते थे वह मकान उक्त महल के पास ही है । हम लोग उसको देखने गए । छोटा-सा साधारण मकान है । कुल दो कमरे हैं और चारों ओर बरामदा । एक कमरे में उनकी खाट रखी है, जिस पर वे सोते थे । खाट पर बिछावन और ओढ़ने के कपड़े समेटे रखे हैं । तकिया भी रखा है । शायद एक छड़ी रखी है, जिसको लेकर वे बाहर निकलते थे या टहलते समय इस्तेमाल करते थे । और भी कुछ छोटी-मोटी चीजें । दूसरे कमरे में कुछ पुस्तकें रखी हैं । उन्हीं की लिखी हुई । वे फ्रेंच और अंग्रेजी दोनों भाषाएँ जानते थे । बरामदे में लकड़ी की बनी बेंच रखी हुई थी, जिस पर मुलाकाती या अन्य लोग आकर बैठते । एक टाइपराइटर मशीन भी रखी है । हो-ची-मीन्ह राष्ट्रपति बन जाने पर भी अपनी जरूरत की चीजें स्वयं टाइप कर लेते थे । यह उनका बड़ा पुराना अभ्यास था । वे कहा करते थे कि अपने जीवन-भर के सीखे कामों और अनुभवों को क्यों छोड़ दें ? अभ्यास बनाए रखना चाहिए । वह मकान वैसा ही था, जैसा अगल-बगल रहने वाले साधारण नागरिकों का । मकान के सामने एक तालाब है । दुनिया भर की मछलियों की विभिन्न जातियाँ उसमें हैं । यहीं से हम लोगों को वह मकान भी दिखाया गया जहाँ हो-ची-मीन्ह राष्ट्रपति होने से पहले रहते थे । मुझे तो उल्लिखित मकान से भी साधारण यही मकान मालूम पड़ा, जहाँ उन्होंने राष्ट्रपति होने के बाद रहना पसंद किया। अब यहाँ कोई नहीं रहता। वह राष्ट्र को समर्पित है । उसे राष्ट्र का संरक्षण प्राप्त है । वह वियतनाम की जनता की धरोहर है । प्रेरणा-स्रोत है । जहाँ जाने पर राष्ट्र की सुप्त आत्मा जाग्रत हो उठती है । एक आदमी है जो उसकी देखभाल करता है । एक गाइड है, जो उसके बारे में जानकारी देता है । वियतनाम राष्ट्र के सबसे बड़े राष्ट्रीय महत्त्व का स्थान है वह । श्री हो-ची-मीन्ह वियतनाम के सर्वप्रिय नेता रहे । वहाँ दो शब्द बड़े प्रचलित हैं—एक 'हो-ची-मीन्ह' और दूसरा 'हुअ सेन' जिसका अर्थ है कमल का फूल । उसकी लोकप्रियता वहाँ जाने पर ही जानी जा सकती है ।

❑❑❑

अभ्यास

पाठ के साथ

1. हो-ची-मीन्ह की तस्वीर अंत:सलिला फल्गू नदी की तरह लेखक के हृदय को सींचती रही है । लेखक हो-ची-मीन्ह से इतना प्रभावित क्यों है ?
2. 'अंतरराष्ट्रीयता पनप नहीं सकती, जब तक राष्ट्रीयता का पूर्ण विकास न हो ।' इस कथन पर विचार करें और अपना मत दें ।
3. हो-ची-मीन्ह केवल वियतनाम के नेता बनकर नहीं रहे । वे विश्वद्रष्टा और विश्व-विश्रुत हुए । पाठ के आधार पर उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताइए ।

4. 'जिंदगी का हर कदम मंजिल है । इस मंजिल तक पहुँचने से पहले साँस रुक सकती है ।' इस कथन का क्या अभिप्राय है ।
5. वियतनामी भाषा में 'हांग खोंग' और 'हुअ सेन' का क्या अर्थ है ?
6. लेखक को ऐसा क्यों लगता है कि मैकांग नदी के साथ उसका गहरा भावनात्मक संबंध है ।
7. हानोई साइकिलों का शहर है । हम इस बात से क्या सीख सकते हैं ?
8. लेखक ने हो-ची-मीन्ह के घर का वर्णन किस प्रकार किया है ? इससे हमें क्या प्रेरणा मिलती है ।

पाठ के आस-पास

1. वियतनाम के स्वाधीनता संग्राम से जुड़ी हुई तस्वीरें उपलब्ध करें और उसके स्वाधीनता संग्राम का इतिहास बताते हुए हो-ची-मीन्ह के योगदान पर एक लेख लिखें ।
2. विश्व मानचित्र पर वियतनाम, बैंकाक, हानोई, मैकांग, तिब्बत, लाओस, कंबोडिया को दर्शाएँ ।
3. हानोई का अंकन लेखक ने साफ-सुथरे शहर के रूप में किया है । आप अपने शहर या गाँव का वर्णन किस रूप में करेंगे । विस्तार से लिखें https://www.evidyarthi.in/
4. हो-ची-मीन्ह और महात्मा गाँधी पर एक तुलनात्मक लेख लिखें ।
5. भोला पासवान शास्त्री उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ एवं विचारक थे । उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अपने शिक्षक से चर्चा करें एवं उनके जन्म दिवस पर कार्यक्रम आयोजित करें तथा उन पर एक पर्चा तैयार कर पढ़ें ।

भाषा की बात

1. लेखक ने हो-ची-मीन्ह के लिए किन-किन विशेषणों का प्रयोग किया है ? पाठ से उन विशेषणों को चुनें ।
2. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य प्रयोग द्वारा लिंग निर्णय करें –
   निधि, स्केच, प्राण, सुधि, तस्वीर, विभूति, संपत्ति, संरक्षण, दाढ़ी
3. निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय निर्दिष्ट करें –
   राजनीतिक, विदेशी, राष्ट्रीयता, जीवंतता, नागरिक, अंतरराष्ट्रीयता, वातानुकूलित, औपनिवेशिक
4. इन शब्दों के उपसर्ग निर्दिष्ट करें –
   उन्नति, परिलक्षित, प्रतिकृति, अपूर्व, स्वागत
5. अर्थ की दृष्टि से निम्नलिखित वाक्यों की प्रकृति बताएँ –
   (क) दिन बीतते गए ।
   (ख) हो सकता है दो-चार वर्ष और पहले की हो ।
   (ग) इसमें संदेह नहीं कि उनका जीवन कभी नहीं सूखने वाले प्रेरणा-स्रोत के समान बना रहेगा ।
   (घ) वे कौन हैं, कहाँ के हैं और क्या हैं, जानने की सुधि भी नहीं रही ।
6. पाठ से प्रत्येक कारक के कुछ उदाहरण चुन कर लिखें ।
7. पाठ से विभिन्न कारकों के परसर्ग रहित एवं परसर्ग सहित उदाहरण चुनें और कारक रूप स्पष्ट करें ।

शब्द निधि

स्मृति	:	याद
अन्यमनस्क भाव	:	अनमने भाव से
सव्यसाची	:	बायाँ-दायाँ दोनों हाथ से निशाना साधनेवाला, अर्जुन के लिए रूढ़
फबना	:	शोभित होना
परिलक्षित	:	प्रकट दिखाई पड़ना
निधि	:	खजाना
गुलदस्ता	:	पुष्पगुच्छ, फूलों का गुच्छा
औपनिवेशिक काल	:	जब वियतनाम पर दूसरे देश का शासन था
तेजस्वी	:	तेजपूर्ण
मैजेस्टिक	:	जादुई
सद्य:स्नात	:	तुरंत स्नान किया हुआ
सुधि	:	**स्मृति, ध्यान**
हरफों	:	अक्षरों
अंत:सलिला	:	अंदर-ही-अंदर प्रवाहित होनेवाली नदी
विभूति	:	ऐश्वर्यमय व्यक्ति
विश्व-विश्रुत	:	विश्व विख्यात
पार्थिव	:	लौकिक
दुभाषिया	:	ऐसा व्यक्ति जो दो भिन्न भाषा-भाषियों के बीच बातचीत कराता है ।
शिकंजा	:	कैद, पकड़
पैगाम	:	संदेश